B.A - II Part

Say's Law of Market

रोजगार सिद्धान्त का प्रतिपादन सबसे पहले Classical Economist जिनमें Adam Smith एवं Ricardo एवं J.B. Say का नाम प्रमुख है

Classical Economist यह मानते थे कि अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार की स्थिति किसी कारणवश इसमें असन्तुलन वर्तमान (रहती है) यदि किसी कारणवश यह पूर्ण प्रतियोगिता व्यवस्था उत्पन्न हो जाए तो यह अर्थव्यवस्था की क्रियाशीलता की उपलब्धि एवं (स्वतंत्र अर्थव्यवस्था पूंजीवाद) अर्थव्यवस्था द्वारा पुनः स्थापित हो जाता है क्योंकि में automatic adjustment होता रहता है जब उत्पादन होता है को किसी ठेकेदार के काम करते हैं जब उत्पादन किया जाता तो साधनों, श्रमिकों इत्यादि को काम या व्यापार से खरीदे गए है, उन्हें भुगतान होता है, जिससे वे ही स्वाभाविक विनिमय-खर्च करते हैं क्योंकि मुद्रा को इसलिए देश में भी का माध्यम माना गया था, इसलिए अर्थव्यवस्था में जो उत्पादन होता है, उसकी मांग अर्थव्यवस्था को मानना जाता है। इस Classical Economist का अनुमान था कि Supply अपनी Demand का सृजन करती है) है एवं अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार (बना रहता है)

J.B. Say द्वारा प्रतिपादित बाजार का नियम इस सिद्धान्त का आधार है। उनके अनुसार पूर्ति अपनी मांग स्वयं उत्पन्न कर लेती है। (Supply creates its own Demand) अर्थात् उत्पादन की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है साधनों को उत्पादन में लगाया जाता है, उन्हें आय प्राप्त होती है जिससे मांग उत्पन्न होती है, इसलिए J.B. Say का कहना था कि Supply creates its own Demand.

Barter System में वस्तु का उत्पादन (स्वयं उपभोग के लिए नहीं किया जाता है बल्कि उसका विनिमय किया जाता है इस प्रकार पूर्ति अपनी मांग को उत्पन्न करती है, उसी प्रकार मौद्रिक विनिमय व्यवस्था चलती है। प्रो० में भी यह ~~[illegible]~~ प्रक्रिया की व्याख्या A.C. Pigou ने इस सिद्धान्त की मौद्रिक मजदूरी करते हुए यह कहा है कि मौद्रिक मजदूरी

Scanned with CamScanner

लोचशीलता या परिवर्तनशीलता के कारण पूर्ण रोजगार की स्थिति निर्धारित होती है।

Classical Economist के अनुसार जो बचत होती है अथवा व्यय जो पूंजीगत वस्तुओं — मशीन, औजार इत्यादि पर किया जाता है। बचत एवं विनियोग के बीच समानता लाने का कार्य ब्याज दर करता है। जब ब्याज दर ऊंची होगी तो बचत अधिक एवं विनियोग कम होगा। बचत अधिक होने पर ब्याज दर घटेगा एवं विनियोग में वृद्धि होगी। इस प्रकार Rate of Interest की लोचशीलता के कारण Full Employment स्थापित होता है।

अतः निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि Classical Economist Full Employment को एक सामान्य अवस्था मानते हैं। Perfect Competition के अनुमान से Say (से) के Market (Law) की क्रियाशीलता मजदूरी एवं ब्याज दर की ~~लोचशीलता~~ लोचशीलता एवं परिवर्तनशीलता के कारण पूर्ण रोजगार स्थापित होता है तथा बेकारी रहता है इतना ही है कुछ भी ऐच्छिक (भी रहे)। Say के द्वारा यह नियम [illegible] प्रतिपादित नियम बच सकता। इनके द्वारा प्रतिपादित बेरोजगारी अनैच्छिक नहीं हो सकती है।

प्रो० [illegible]
अर्थशास्त्र विभाग